ब्रिक्स भारत के लिए क्यों मायने रखता है

लेखक - शुभजीत रॉय (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

13 नवंबर, 2019

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 11वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्राजील के लिए रवाना हो गए हैं। ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी का फोकस आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाने पर रहेगा।

इस आलेख में हम जानेंगे कि इस समूह की शुरुआत कैसे हुई, यह कब विकसित हुआ, कौन-कौन से मुद्दे हैं जिस पर ये ध्यान देता है और वैश्विक क्रम में भारत के लिए यह क्या मायने रखता है।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन: पृष्ठभूमि और वर्त्तमान स्थिति

30 नवंबर 2001 को, जिम ओश्नील, एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री, जो उस समय गोल्डमैन सैक्स एसेट मैनेजमेंट के अध्यक्ष थे, ने ब्राजील, रूस, भारत और चीन की चार उभरती अर्थव्यवस्थाओं का वर्णन करने के लिए 'ब्रिक' शब्द गढ़ा था।

गोल्डमैन सैक्स 'ग्लोबल इकोनॉमिक पेपर' सीरीज के लिए लिखे गए एक पत्र 'द वर्ल्ड नीड्स बेटर इकोनॉमिक ब्रिक्स' में ओश्नील - जो डेविड कैमरन और थेरेसा मे की अगुवाई वाली सरकारों के बीच 2015 से 2016 के बीच ट्रेजरी में वाणिज्यिक सचिव के रूप में काम कर चुके हैं- ने इकोनॉमिक्स एनालिसिस के आधार पर BRIC की स्थिति सुनिश्चित की, जिसमें उन्होंने अनुमान लगाया कि चार अर्थव्यवस्थाएँ व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से कहीं अधिक आर्थिक स्थान पर अपनी स्थिति मजबूत कर लेंगी और अगले 50 वर्षों में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन जाएंगी।

ओश्नील ने कहा कि "2001 और 2002 में, बड़ी उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में वास्तविक जीडीपी वृद्धि जी 7 से अधिक होगी। 2000 के अंत में, ब्राजील, रूस, भारत और चीन (BRIC) में क्रय-शक्ति समता (पर्चेजिंग पावर पैरिटी- (PPP)) के आधार पर US + में GDP दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 23.3% थी। वर्तमान जीडीपी के आधार पर, विश्व जीडीपी का BRIC हिस्सा 8% है। अगले 10 वर्षों में, ब्रिक (BRIC) और विशेष रूप से विश्व जीडीपी में चीन का वजन बढ़ेगा, जो ब्रिक्स में राजकोषीय और मौद्रिक नीति के वैश्विक आर्थिक प्रभाव के बारे में महत्त्वपूर्ण मुद्दों को उठाएगा। इन संभावनाओं के अनुरूप, विश्व नीति निर्धारण मंचों को फिर से संगठित किया जाना चाहिए और विशेष रूप से, जी 7 को ब्रिक प्रतिनिधियों को शामिल करने के लिए समायोजित किया जाना चाहिए। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कि 'क्या जी 7 को जी 9 द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए?', उन्होंने कहा कि यह स्पष्ट है कि वर्तमान जी 7 को 'अपग्रेड' और ब्रिक्स के लिए बनाए गए स्थान को और अधिक प्रभावी बनाना होगा।

इसके अलावा, भारत की भूमिका के बारे में, उन्होंने लिखा कि "भारत लगभग निश्चित रूप से जी 9 क्लब में शामिल होने के लिए सबसे कम उत्सुक होगा। वे किसी भी 'बाध्यता' को अवांछित नहीं मान सकते, साथ ही साथ अपने स्वयं के अनुभवों को देखते हुए सलाह देने की क्षमता 'को सीमित कर सकते हैं। हालाँकि, उनके आकार, जनसंख्या और क्षमता (और उनकी भौगोलिक स्थिति) को देखते हुए, भारत का संभावित समावेश आकर्षक होगा।"

अट्ठारह साल बाद, भारत खुद को समूहीकरण और उससे परे, विशेष रूप से G20 में उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में पाता है। ब्रिक्स अब दुनिया की 42% आबादी के लिए पाँच अर्थव्यवस्थाओं को एक साथ लाता है, जो वैश्विक जीडीपी का 23% और विश्व व्यापार का लगभग 17% हिस्सा हैं।

एक औपचारिक समूहन के रूप में, BRIC ने जुलाई 2006 में G8-आउटरीच शिखर सम्मेलन पर सेंट पीटर्सबर्ग में रूस, भारत और चीन के नेताओं की बैठक के बाद शुरू किया। सितंबर 2006 में न्यूयॉर्क में UNGA के तहत BRIC के विदेश मंत्रियों की पहली बैठक के दौरान समूह की औपचारिक शुरुआत की गई थी।

सितंबर 2010 में न्यूयॉर्क में ब्रिक्स के विदेश मंत्रियों की बैठक में दक्षिण अफ्रीका को शामिल करने के साथ ब्रिक में ब्रिक्स का विस्तार करने पर सहमति हुई थी। दक्षिण अफ्रीका 14 अप्रैल, 2011 को सान्या में तीसरे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया था। पिछले साल, समूह के नेताओं जोहान्सबर्ग में ब्रिक्स की 10वीं वर्षगांठ मनाई गयी।

भारत और वर्तमान ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

पीएम मोदी छठी बार ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। 2014 में पहली बार उन्होंने ब्राजील के ही शहर फोर्टालेजा में शिरकत की थी। पीएम रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी द्विपक्षीय बैठक करेंगे।

भारतीय दृष्टिकोण से, ब्रिक्स विकासशील देशों या वैश्विक दक्षिण की आवाज बनकर उभरा है। जैसा कि ये देश विकसित देशों की आक्रामकता का सामना करते हैं, डब्ल्यूटीओ से जलवायु परिवर्तन तक के मुद्दों पर चुनौतियों को उठाते हुए, नई दिल्ली का मानना है कि ब्रिक्स को विकासशील देशों के अधिकारों की रक्षा करना है। विदित हो कि पाँच ब्रिक्स देश भी जी-20 के सदस्य हैं।

हालाँकि, पिछले पाँच वर्षों में पाँच देशों में से तीन में आर्थिक ह्रास हुआ है, लेकिन ब्रिक्स सहयोग के दो स्तंभ हैं - नेताओं और मंत्रियों की बैठकों के माध्यम से आपसी हित के मुद्दों पर परामर्श और व्यापार, वित्त, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, कृषि और आईटी सहित क्षेत्रों में वरिष्ठ अधिकारियों की बैठकों के माध्यम से सहयोग।

साथ ही, भारत को एक तरफ रूस-चीन के बीच संतुलन कायम करना है, तो दूसरी तरफ अमेरिका से भी संबंध बनाए रखना है। नई दिल्ली का मानना है कि पिछले कुछ वर्षों में, ब्रिक्स ने आतंकवाद के खिलाफ एक मजबूत रुख अपनाने और आतंकवाद से संबंधित विशिष्ट पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए समूह के भीतर भी काम किया है, जिसमें भारत ने सबसे अहम् किरदार निभाया है।

इस बार ब्राजील में

इस साल आतंकवाद पर संयुक्त कार्यदल ने पाँच क्षेत्रों में उप-कार्य समूहों का गठन करने का निर्णय लिया है। आतंकवादी वित्तपोषण; आतंकवादी उद्देश्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग; कट्टरता का मुकाबला; विदेशी आतंकवादी लड़ाकों का मुद्दा; और क्षमता निर्माण।

उम्मीद है कि भारत आतंकवादी उद्देश्यों के लिए इंटरनेट के उपयोग पर उपसमूह की अध्यक्षता करेगा। पिछले महीने ब्रिक्स के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठकों के दौरान, भारत के एनएसए अजीत डोभाल ने भारत में डिजिटल फोरेंसिक पर ब्रिक्स कार्यशाला की मेजबानी करने का प्रस्ताव रखा। ब्राजील ने भी आतंकवाद को अपनी अध्यक्षता के लिए प्राथमिकता में से एक बना दिया है। आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए इसने रणनीति पर पहला ब्रिक्स सेमिनार आयोजित किया।

एक तथ्य कि ब्रिक्स ने आतंकवाद को एजेंडे में सबसे ऊपर रखा है, भारत के लिए एक सफलता है। बहुपक्षवाद के सवाल पर, मोदी ने बहुपक्षीय प्रणाली को मजबूत करने और सुधार के लिए एक दृष्टिकोण व्यक्त किया है। उन्होंने रेखांकित किया है कि जब भारत बहुपक्षवाद का आह्वान करता है, तो यह बहुपक्षवाद की यथास्थिति को सुदृढ़ करने के लिए नहीं है, बल्कि इसे सुधारने के लिए है क्योंकि ब्रिक्स मूल रूप से ऐसा करने के लिए तैयार था।

नेता समकालीन दुनिया में राष्ट्रीय संप्रभुता के अभ्यास के लिए चुनौतियों और अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए ब्रिक्स-प्रतिबंधित

सत्र में भाग लेंगे। प्लेनरी सत्र में, नेता ब्रिक्स समाजों के आर्थिक विकास के लिए सहयोग पर चर्चा करेंगे। ब्रिक्स व्यापार परिषद के साथ ब्रिक्स नेताओं की एक बैठक होगी और व्यापार और निवेश संवर्धन एजेंसियों के बीच ब्रिक्स समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। समापन पर, शिखर सम्मेलन के नेता एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी करेंगे।

शिखर सम्मेलन भारत के लिए भारत में निर्धारित 2021 शिखर सम्मेलन की मेजबानी के लिए एक आधार प्रदान करेगा। आखिरी शिखर सम्मेलन 2016 में गोवा में हुआ था। भारत इस बात को भी ध्यान में रखेगा कि भारत में आयोजित होने वाला G20 शिखर सम्मेलन 2022 में होगा और यह नई दिल्ली के दृष्टिकोण से दो एजेंडों के साथ तालमेल बिठाने का एक अवसर होगा।

GS World टीम...

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2019

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्राजील (Brazil) में 11वें ब्रिक्स सम्मेलन (BRICS summit) में भाग लेने के लिए दो दिवसीय यात्रा पर रवाना हुए।
- ब्रिक्स का ये सम्मेलन ब्राजील की राजधानी ब्राजीलिया में आयोजित होने जा रहा है जिसमें प्रधानमंत्री का मुख्य मुद्दा आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाने पर रहेगा।
- 11वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी प्रमुख क्षेत्रों में दुनिया की पाँच प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे।
- ब्रिक्स दुनिया की पाँच अग्रणी उभरती अर्थव्यवस्थाओं- ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के समूह के लिये एक संक्षिप्त शब्द है।

संरचना

- यह अंतर्राष्ट्रीय अंतर-सरकारी संगठन नहीं है, न ही यह किसी संधि के तहत स्थापित हुआ है। इसे पाँच देशों का एकीकृत प्लेटफॉर्म कहा जा सकता है।
- ब्रिक्स देशों के सर्वोच्च नेताओं का तथा अन्य मंत्रिस्तरीय सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- ब्रिक्स देशों की जनसंख्या दुनिया की आबादी का लगभग 40% है और इसका वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा लगभग 30% है।
- इसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक इंजन के रूप में देखा जाता है और यह एक उभरता हुआ निवेश बाजार तथा वैश्विक शक्ति है।

पृष्ठभूमि

- BRICS की चर्चा वर्ष 2001 में गोल्डमैन सैक्स (Goldman Sachs) के अर्थशास्त्री जिम ओ' नील द्वारा ब्राजील, रूस, भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं के लिये विकास की संभावनाओं पर एक रिपोर्ट में की गई थी।
- वर्ष 2006 में चार देशों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की सामान्य बहस के अंत में विदेश मंत्रियों की वार्षिक बैठकों के साथ एक नियमित अनौपचारिक राजनयिक समन्वय शुरू किया।
- इस सफल बातचीत से यह निर्णय हुआ कि इसे वार्षिक शिखर सम्मेलन के रूप में देश और सरकार के प्रमुखों के स्तर पर आयोजित किया जाना चाहिये।
- पहला BRIC शिखर सम्मेलन वर्ष 2009 में रूस के येकतेरिनबर्ग में हुआ और इसमें वैश्विक वित्तीय व्यवस्था में सुधार जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई।
- दिसंबर 2010 में दक्षिण अफ्रीका को BRIC में शामिल होने के लिये आमंत्रित किया गया और इसे BRICS कहा जाने लगा।
- मार्च 2011 में दक्षिण अफ्रीका ने पहली बार चीन के सान्या में तीसरे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

उद्देश्य

- ब्रिक्स का उद्देश्य अधिक स्थायी, न्यायसंगत और पारस्परिक रूप से लाभकारी विकास के लिये समूह के साथ-साथ, अलग-अलग देशों के बीच सहयोग को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाना है।
- ब्रिक्स द्वारा प्रत्येक सदस्य की आर्थिक स्थिति और विकास को ध्यान में रखा जाता है ताकि संबंधित देश की आर्थिक ताकत के आधार पर संबंध बनाए जाएँ और जहाँ तक संभव हो सके प्रतियोगिता से बचा जाए।

- ब्रिक्स विभिन्न वित्तीय उद्देश्यों के साथ एक नए और आशाजनक राजनीतिक-राजनयिक इकाई के रूप में उभर रहा है, जो वैश्विक वित्तीय संस्थानों में सुधार के मूल उद्देश्य से परे है।

सहयोग के क्षेत्र

- **आर्थिक सहयोग**- ब्रिक्स देशों में कई क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग की गतिविधियों के साथ-साथ व्यापार और निवेश तेजी से बढ़ रहा है।
- ब्रिक्स समझौतों से आर्थिक और व्यापारिक सहयोग, नवाचार सहयोग, सीमा शुल्क सहयोग, ब्रिक्स व्यापार परिषद, आकस्मिक रिजर्व समझौते और न्यू डेवलपमेंट बैंक के बीच रणनीतिक सहयोग आदि सामने आए हैं।
- ये समझौते आर्थिक सहयोग को मजबूत करने और एकीकृत व्यापार तथा निवेश बाजारों को बढ़ावा देने के साझा उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान देते हैं।
- **पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज**- ब्रिक्स सदस्यों ने पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज को मजबूत करने और संस्कृति, खेल, शिक्षा, फिल्म आदि क्षेत्रों तथा युवाओं में निकट सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता को पहचाना है।
- पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज द्वारा ब्रिक्स सदस्यों के बीच खुलापन, समावेशिता, विविधता और सीखने की भावना आदि मामलों में संबंधों के मजबूत होने की अपेक्षा की जाती है।
- पीपल-टू-पीपल एक्सचेंज में यंग डिप्लोमेट्स फोरम, पार्लियामेंट्री फोरम, ट्रेड यूनियन फोरम, सिविल ब्रिक्स के साथ-साथ मीडिया फोरम भी शामिल हैं।
- **राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग**- ब्रिक्स सदस्यों के राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग का उद्देश्य विश्व को शांति, सुरक्षा, विकास और अधिक न्यायसंगत एवं निष्पक्ष बनाने में सहयोग करना है।
- ब्रिक्स सदस्य देशों की घरेलू और क्षेत्रीय चुनौतियों के लिये साझा नीतिगत सलाह तथा सर्वोत्तम कार्यों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करता है।
- यह वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था के पुनर्गठन पर बल देता है ताकि यह बहुपक्षवाद पर आधारित हो एवं अधिक संतुलित हो।
- दक्षिण अफ्रीका की विदेश नीति की प्राथमिकताओं के लिये ब्रिक्स को एक माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है जिसमें अफ्रीकी एजेंडा और दक्षिण-दक्षिण सहयोग शामिल हैं।
- **सहयोग तंत्र**- सदस्यों के बीच निम्नलिखित माध्यमों से सहयोग किया जाता है। राष्ट्रीय सरकारों के बीच औपचारिक राजनयिक जुड़ाव। सरकार से संबद्ध संस्थानों के माध्यम से संबंध, उदाहरण के लिये राज्य के स्वामित्व वाले उद्यम और व्यापार परिषद। सिविल सोसायटी और पीपल-टू-पीपल कॉन्टेक्ट।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **ब्रिक्स के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

   1. 11वाँ ब्रिक्स सम्मेलन ब्राजील की राजधानी ब्राजीलिया में सम्पन्न हो रहा है।
   2. इस बार भारत का फोकस वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा पर सहयोग बढ़ाने से है।
   3. ब्रिक्स के देश जी-20 के सदस्य भी हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

   (a) 1 और 3
   (b) 1 और 2
   (c) 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following Statements in the context of BRICS-**

   1. 11th BRICS Summit is going to be held in Brasilia capital of Brazil.
   2. This time India's focus is on encouraging cooperation on global competetiveness.
   3. The members of BRICS are also the members of G-20

   Which of the above statements are correct?

   (a) 1 and 3
   (b) 1 and 2
   (c) 2 and 3
   (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्नः वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में ब्रिक्स का क्या निहितार्थ है? भारत और चीन कई क्षेत्रीय समूहों में साथ शामिल हैं, फिर ऐसे में ब्रिक्स भारत-चीन के लिए बेहतर मंच किस प्रकार सिद्ध हो सकता है? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

What is the relevence of BRICS in the current global order? India and China are involved in many regional groups, then how can BRICS prove to be a better platform for India-China? Discuss. (250 words)

नोट : 12 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।